उपकार

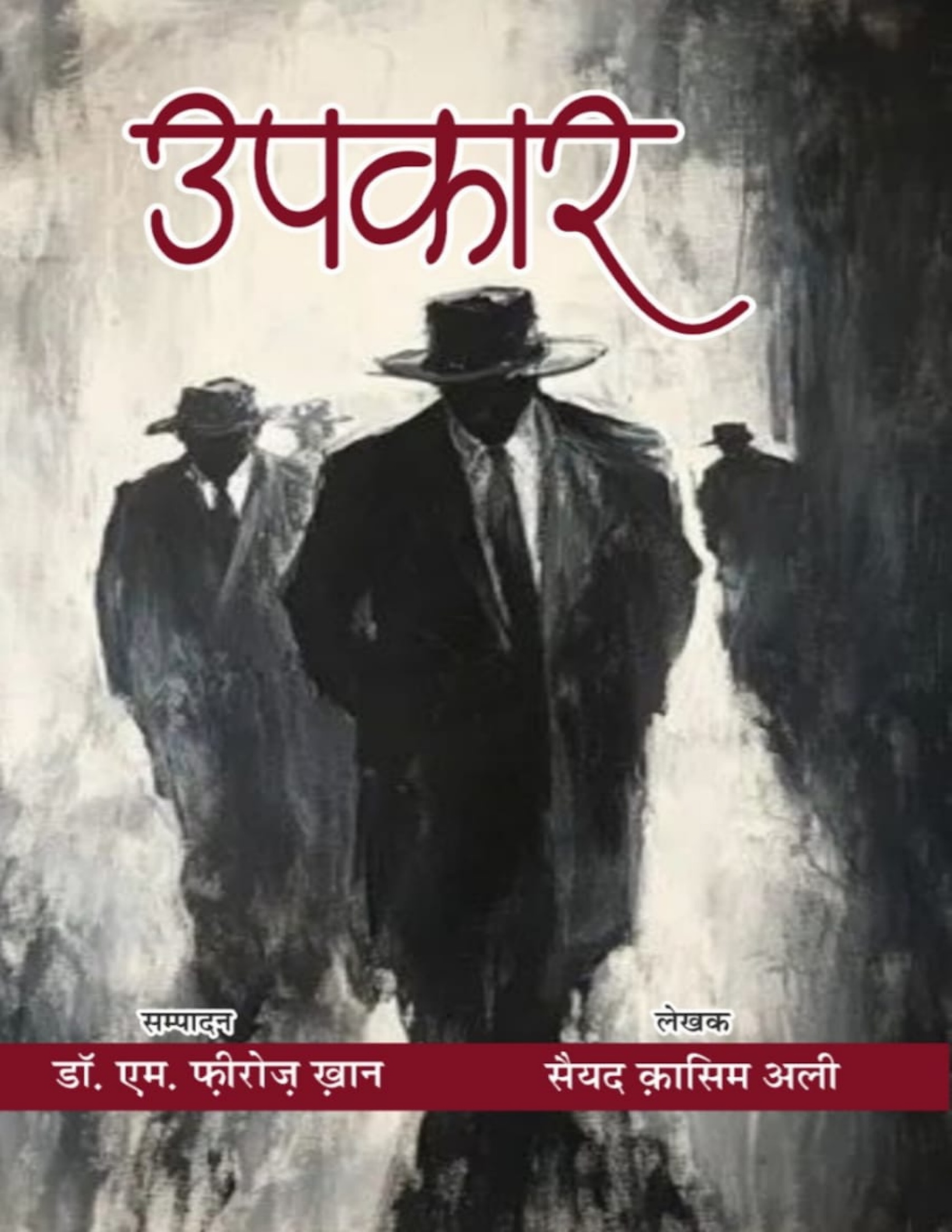

सम्पादन

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

लेखक

सैयद क़ासिम अली

उपकार

(लघु उपन्यास)

लेखक

सैयद कासिम अली 'साहित्यालंकार'

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान

मूल्य : सौ रुपए मात्र

पुस्तक: उपकार (लघु उपन्यास)

लेखक : सैयद कासिम अली

©: डॉ. शहनाज़ फिरदौस

सम्पादक: डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान

प्रकाशक: विकास प्रकाशन, 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027

संस्करण: प्रथम, जुलाई 2025 ई.

आवरण-सज्जा: छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर

शब्द-सज्जा: छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर

मुद्रक: छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर

मूल्य: 100/-

ISBN: 978-93-48200-74-7

स्व. हाजी सैयद राशिद अली (इंजीनियर), स्व. सैयद हैदर अली

एवं

समस्त परिवार को सादर समर्पित

दो शब्द

उपन्यास कथा-साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विधा है क्योंकि इसमें जीवन की सर्वांगपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इसके साथ-साथ उपन्यास की एक प्रमुख विशेषता इसके कथानक की होती है जिसमें एक मुख्य कथा के साथ-साथ अन्य कथाएँ भी अन्तर्गुम्फित होती हैं जो पात्रों के चरित्र का निर्माण करती हैं। यही कारण है कि उपन्यास गद्य साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। उपन्यास को पढ़ने और लिखने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है क्योंकि जिस प्रकार जीवन में एक-एक करके घटनाओं का आना- जाना अलग-अलग समय पर होता है। उसी प्रकार उपन्यास में भी घटनाओं की क्रमशः अभिव्यक्ति होती है जिसमें जीवन के अलग-अलग रूपों के दर्शन होते हैं।

उपन्यास 'उपकार' सैयद कासिम अली का लिखा हुआ एक लघुकाय उपन्यास है जो सर्वप्रथम 1941 में प्रकाशित हुआ था। यह वह समय था जब देश में स्वाधीनता के लिए संघर्ष ज़ोरों पर था और हर ओर से ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध स्वर सुनाई पड़ता था। ऐसे समय में लेखक भी अपनी रचनाओं के माध्यम किसी न किसी रूप में ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध कर रहे थे। ऐसे समय में सैयद कासिम अली ने उपकार उपन्यास मुख्य रूप से तीन छोटी-छोटी कथाओं को एक दूसरे में पिरोकर प्रस्तुत किया। उपन्यास मूल रूप से एक जासूसी उपन्यास है लेकिन इसमें प्रेम, समर्पण, देशभक्ति के साथ-साथ तत्कालीन राजनीति की झलक भी मिलती है।

उपन्यास का आरंभ 'परिचय' से होता है जिसमें नायक मोहनलाल चापलूसी करके आगे बढ़ता जाता है और अन्ततः उसे अपनी चापलूसी की आदत का दुष्परिणाम भोगना पड़ता है। अपनी चापलूसी की आदत को छोड़कर वह जासूसी का प्रशिक्षण लेकर दूसरों का उपकार करके अपने पापों की निवृत्ति करने का मन बनाकर घर से निकल जाता है। इसके बाद उपन्यास में क्रमशः तीन पाठ हैं। पहले पाठ में मोहनलाल ख़ान से मिलता है जो स्वयं एक कुशल जासूस है और किसी-न-किसी खोज में लगा रहता है। उसी समय पता चलता है कि शहर के बाहर एक बंगले में किसी की हत्या हो गयी है। उस हत्या की जानकारी और हत्यारे की खोज में दो ब्रिटिश जासूस भी लगे हैं। ख़ान और मोहनलाल भी वहाँ पहुँचकर हत्यारे की खोजबीन आरंभ कर देते हैं। ख़ान की खोजबीन रंग लाती है और अन्ततः हत्यारा पकड़ा जाता है। लेकिन बाद में पता चलता है कि हत्या के पीछे मुख्य कारण प्रेम संबंध और बदला लेने की भावना होती है क्योंकि जिनकी हत्या की गयी वे पूर्व अपराधी थे जिनसे बदला लेने के लिए जीवनेन्द्र ने बहुत संघर्ष किया। अन्ततः कारागृह में ही जीवनेन्द्र की मृत्यु हो जाती है। इस हत्या के खुलासे और हत्यारे को पकड़ने का समाचार अगले दिन विभिन्न पत्रों में छपता है जिसमें दोनों ब्रिटिश जासूसों की सूझ-बूझ के किस्से छपते हैं और खान का नाम कहीं नहीं होता। मोहनलाल जब ख़ान से इस बारे में बात करता है तो खान कहते हैं कि ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती कि किसी हिन्दुस्तानी व्यक्ति की योग्यता की प्रशंसा हो। "बस, केवल उपकार करने के लिए मैं अपना जीवन अर्पण करता हूँ।" यही उपन्यास का अन्त हो जाता है।